50 Years Pandit Jasraj's Pt.Motiram Pt. Maniram Sangeet Samaroha

Ancient Indians were deeply impressed by the spiritual power of music. Ragas have the power to heal the human mind and body. It is out of this understanding, that Indian classical music was born. Classical music involves single-minded devotion and lifelong commitment.

Indian classical music is scientific in nature and learning it, is like learning a language. In Indian classical music, once you have learned the basic notes, you are introduced to ragas (which are like musical themes), and then you are encouraged to start improvising and making your own melodies.

Pandit Jasraj was born in Hisar, Haryana on January 28, 1930, to a well-known Mewati Gharana, where his grandfather, father, uncles, brothers – all of them were renowned singers. Immersed in a musical family, he was surrounded by musical treasures, masters, instruments and learning since his childhood. His father, Pandit Motiram initiated his basic learning.

In 1934, Pandit Motiram, upon the invitation of the then Nizam of Hyderabad, to become the court musician, shifted to Hyderabad. Jasraj, youngest son of Pandit Motiram got his first music lesson in Hyderabad with his father and that became his most precious memory of life. A ceremony was to be held on 30th November 1934 for the appointment. Unfortunately, Pandit Motiram passed away few hours earlier. Young Jasraj was only 4 years old then.

After the demise of his father, he was trained under his brother Pandit Maniram. At the age of 7, he mastered playing the tabla and began performing with his brothers and other artists. In 1947, the family moved to Kolkatta- the well-known place for artistic creativity and growth. At the age of 22, after turning to classical singing and giving his life for it, he performed at his first concert for the King of Nepal. His spiritual guru Maharaja Jaiwant Singh was a great influence that inculcated the Bhakti element in him and his performances.

He contributed to music with many innovations. He created Jasrangi Jugalbandi, a form of music where male and female singers create a unique surreal sound. He popularized Haveli Sangeet, which is now famous in temples. His penchant for creativity helped him to blend devotional music with classical music. Moreover, he was a master at combining Indian classical music and lyrics, touching moods and emotions. As a teacher, he opened many music schools in different parts of the world.

Pandit Jasraj had a deep emotional attachment with Hyderabad. To seek blessings of his father he kept going back to Hyderabad. The minute he would land in Hyderabad he would touch the land and pray. He created a temple like structure at the place where the last rites of Pandit Motiram were done. He would spend hours singing at this place.

Due to his faith and Swar-abhishek he did, every time he visited Hindu Smashan Ghat, in Amberpeth, its energy transformed. People from around the world started to visit it and were seen emotionally overwhelmed. It became a Musical shrine and everyone started calling it a Mandir or Temple.

In his father's memory in 1972, he started an annual music festival, 'Pandit Motiram Sangeet Samaroha'. After the demise of his eldest brother, Pandit Maniram in 1985, he renamed this annual event as 'Pandit Motiram, Pandit Maniram Sangeet Samaroha'.

The Samaroha has showcased performances of many eminent artistes in the past from varied genres of music and dance. To name a few, Late Pandit Ravi Shankar, Late Ustad Ali Akbar Khan, Late MS Subbalakshmi, Late Pt. Bhimsen Joshi, Pandit Shivkumar Sharma, Pandit Hariprasad Chaurasia, Ustad Amjad Ali Khan, Ustad Zakir Hussain, Dr. L.Subramaniam, Pandit Birju Maharaj, Late Girja Devi, Dr. Padma Subramaniam, Shankar Mahadevan, Hariharan and many others have enthralled Hyderabad city audiences.

He received many awards and appreciation during his lifetime, which includes Padma Shri in 1975, Sangeet Natak Akademi Award for Hindustani Music – Vocal in 1987, Padma Bhushan in 1990 and Padma Vibhushan in 2000. He is a widely recognized star of Indian music worldwide. For Pandit Jasraj's unprecedented and unconditional service towards Hyderabad he was given the title of "Son of Hyderabad" by the State Government. This award was presented to Pandit Jasraj by Bharat Ratna MS Subbalakshmi.

Pandit Jasraj left for heavenly abode on 17th August 2020. His ashes were brought back to Hyderabad so that he could finally be united with his father Pandit Motiram. Today the shrine at Amberpeth reads as **"Pandit Motiram – Pandit Jasraj Mandir"**.

The shrine has become_an iconic monument of a musician who created history with love, and devotion for music. The Annual Sangeet Samaroha is now called "Pandit Jasraj, Pandit Motiram, Pandit Maniram Sangeet Samaroha".

The students and followers of the divine music of Pandit Jasraj continue the tradition. Every year on 30th November, specially designed performances, live renditions by musicians and recordings of divine sound of Pandit Jasraj are played in the Samaroha. In the year 2022 when the whole nation is celebrating Azadi ka Amrit Mahotsav, the Samaroha is celebrating its 50th year.

Department of Posts is honoured to issue Commemorative Postage Stamp on Pandit Jasraj, Pandit Motiram, Pandit Maniram Sangeet Samaroha and salutes the unmatching contribution of these legendary personalities for propagating and enriching Indian Classical Music.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure	:	Ms Gulistaan
Cancellation Cachet	:	Smt. Nenu Gupta
Text	:	Based on information received from the proponent



50 वर्ष पंडित जसराज, पं. मोतीराम, पं. मणिराम संगीत समारोह

प्राचीन भारत के लोग संगीत की आध्यात्मिक शक्ति से अत्यंत अभिभूत थे। रागों में वह शक्ति होती है, जो मन–मस्तिष्क और शरीर के रोगों को हर सकती है। इसी समझ ने भारतीय शास्त्रीय संगीत को जन्म दिया । शास्त्रीय संगीत की एकमेव अनिवार्यता है एकाग्रचित समर्पण भाव और जीवनपर्यंत प्रतिबद्धता।

भारतीय शास्त्रीय संगीत का ताना–बाना वैज्ञानिक स्वरूप का है और इसे सीखना किसी नई भाषा को सीखने के समान है। भारतीय शास्त्रीय संगीत सीखने के सफर की शुरुआत बुनियादी सुरों से होती है। इसके बाद साधक को रागों से परिचित कराया जाता है। रागों को साधने के उपरांत उसे नए–नए प्रयोग करते हुए नई धुनें रचने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

पंडित जसराज का जन्म 28 जनवरी, 1930 को हिसार, हरियाणा के एक सुप्रसिद्ध मेवाती घराने में हुआ। उनके दादा, पिता, चाचा और भाई सभी प्रख्यात गायक थे। संगीत साधना में डूबे परिवार में पलते–बढ़ते पंडित जसराज को संगीत की दुनिया का अनमोल खजाना, गुरुओं का सान्निध्य, वाद्ययंत्रों का साथ और संगीत की शिक्षा का सौभाग्य बचपन से ही प्राप्त हुआ। पंडित जसराज को संगीत की बुनियादी शिक्षा उनके पिता, पंडित मोतीराम से प्राप्त हुई।

1934 में पंडित मोतीराम को हैदराबाद के तत्कालीन निजाम की ओर से दरबारी संगीतज्ञ बनने का प्रस्ताव प्राप्त हुआ, जिसके बाद वे हैदराबाद आ गए। पंडित मोतीराम के सबसे छोटे पुत्र जसराज को संगीत का प्रथम पाठ हैदराबाद में अपने पिता से मिला, जोकि उनके जीवन की सबसे अनमोल स्मृति बन गया। दरबारी संगीतज्ञ के रूप में पंडित मोतीराम की नियुक्ति के लिए 30 नवंबर, 1934 को एक समारोह का आयोजन किया जाना था। परंतु दुर्भाग्यवश समारोह से कुछ घंटे पहले ही पंडित मोतीराम का निधन हो गया। जसराज उस समय मात्र 4 वर्ष के थे।

पिता की मृत्यु के बाद, जसराज को संगीत की शिक्षा उनके भाई पंडित मणिराम ने दी। 7 वर्ष की आयु में उन्होंने तबला बजाने में महारत हासिल कर ली और अपने भाइयों तथा अन्य कलाकारों के साथ प्रस्तुति देने लगे। 1947 में पंडित जसराज का समस्त परिवार कोलकाता में आ बसा, जोकि उन दिनों कला और कलात्मक सृजन और विकास के लिए सुप्रसिद्ध स्थान था। यहां शास्त्रीय संगीत की शिक्षा प्राप्त कर और अपना संपूर्ण जीवन संगीत के नाम कर 22 वर्ष की आयु में पंडित जसराज ने अपनी पहली प्रस्तुति नेपाल के महाराज के समक्ष दी। पंडित जसराज पर उनके आध्यात्मिक गुरू महाराजा जयवंत सिंह का गहरा प्रभाव था, जिन्होंने, उनके व्यक्तित्व और उनकी प्रस्तुतियों में भक्ति का रस भरा।

पंडित जसराज ने नए–नए प्रयोग कर संगीत के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान किया। उन्होंने संगीत की एक नई शैली अर्थात् जसरंगी जुगलबंदी विकसित की, जिसमें महिला एवं पुरुष गायकों की मिली–जुली गायकी से एक अद्भुत, अनूठी पारलौकिक ध्वनि का जन्म होता है। उन्होंने हवेली संगीत को लोकप्रिय बनाया, जो मंदिरों में अत्यंत प्रसिद्ध है। सृजनशीलता के प्रति उनके अगाध प्रेम की बदौलत वे भक्ति संगीत तथा शास्त्रीय संगीत का संगम करवा पाए। यही नहीं, उन्हें भारतीय शास्त्रीय संगीत और गायकी के बोलों का अद्भुत मिश्रण कर विभिन्न मनोभावों और भावनाओं को छूने में भी महारत हासिल थी। संगीत शिक्षक के रूप में उन्होंने विश्व के विभिन्न भागों में अनेक संगीत विद्यालयों की स्थापना भी की।

हैदराबाद से पंडित जसराज का बड़ा भावनात्मक जुड़ाव था। अपने पिता का आशीर्वाद लेने वे बार–बार हैदराबाद जाते रहे। हैदराबाद की जमीन पर पांव रखते ही, वे उसे प्रणाम कर ईश्वर का ध्यान करते। पंडित जसराज ने हैदराबाद में उस जगह एक मंदिरनुमा स्थान बनवाया, जहां उनके पिता पंडित मोतीराम का अंतिम संस्कार हुआ था। वे इस स्थान पर घंटों बैठकर गायन किया करते थे।

पंडिज जसराज जब–जब अंबरपेट स्थित हिंदू श्मशान घाट जाते, उनकी आस्था और स्वराभिषेक से वहां अलग ही ऊर्जा का संचार हो जाता। धीरे–धीरे देश–विदेश से लोग वहां आने लगे और भाव–विभोर होकर जाते। जल्द ही यह स्थान संगीत का पूजनीय स्थल बन गया और लोग इसे मंदिर कहने लगे।

पंडित जसराज ने अपने पिता की स्मृति में 1972 में 'पंडित मोतीराम संगीत समारोह' नामक एक वार्षिक संगीतोत्सव की शुरुआत की। 1985 में अपने अग्रज पंडित मणिराम का देहांत हो जाने के बाद उन्होंने इस वार्षिकोत्सव का नाम बदलकर 'पंडित मोतीराम, पंडित मणिराम संगीत समारोह' कर दिया।

इस समारोह में संगीत एवं नृत्य की विभिन्न विधाओं से जुड़े अनेक प्रख्यात कलाकारों द्वारा प्रस्तुतियां दी गई हैं। इनमें स्व. पंडित रविशंकर, स्व. उस्ताद अली अकबर खां, स्व. एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी, स्व. पंडित भीमसेन जोशी, पंडित शिवकुमार शर्मा, पंडित हरिप्रसाद चौरसिया, उस्ताद अमजद अली खां, उस्ताद जाकिर हुसैन, डॉ. एल. सुब्रमणियम, पंडित बिरजू महाराज, स्व. गिरिजा देवी, डॉ. पद्मा सुब्रमणियम, शंकर महादेवन, हरिहरन और अनेक अन्य नामी कलाकार शामिल हैं, जिन्होंने हैदराबाद के दर्शकोश्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया है।

पंडित जसराज को उनके जीवनकाल में अनेक पुरस्कारों और सम्मानों से अलंकृत किया गया। इनमें 1975 में पद्मश्री, 1987 में हिंदुस्तानी संगीत–वोकल के लिए संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, 1990 में पद्म भूषण और 2000 में पद्म विभूषण पुरस्कार शामिल है। पंडितजी, भारतीय संगीत फलक के विश्वविख्यात चमकते सितारे हैं। हैदराबाद की अपार तथा निःस्वार्थ सेवा के सम्मानस्वरूप राज्य सरकार ने उन्हें ''सन ऑफ हैदराबाद'' की उपाधि दी। पंडित जसराज को यह पुरस्कार भारत रत्न एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी के हाथों मिला।

17 अगस्त, 2020 को पंडित जसराज का निधन हो गया। उनकी अस्थियों को हैदराबाद लाया गया और उनकी समाधि, उनके पिता पंडित मोतीराम की समाधि के बगल में बनाई गई। अंबरपेट स्थित इस समाधि स्थल को अब 'पंडित मोतीराम–पंडित जसराज मंदिर' के नाम से जाना जाता है।

यह समाधि, संगीत के प्रति अपने अनुराग और समर्पण भाव के बल पर इतिहास रचने वाले महान संगीतज्ञ का सुप्रसिद्ध स्मारक स्थल है। पंडित जसराज द्वारा आरंभ किए गए वार्षिक संगीत समारोह का नाम पंडित जसराज का पंडित मोतीराम, पंडित मणिराम संगीत समारोह है।

पंडित जसराज के दैवीय संगीत की समृद्ध परंपरा को उनके शिष्य और अनुयायी आगे बढ़ा रहे हैं। प्रतिवर्ष 30 नवंबर को विशेष रूप से तैयार किए गए कार्यक्रम, संगीतज्ञों की लाइव प्रस्तुतियां आदि तथा पंडित जसराज के भक्तिमय संगीत का स्वर इस समारोह में बिखेरा जाता है। 2022 में जब पूरा देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है, तो यह सुखद संयोग है कि यह इस समारोह का 50वां वर्ष है।

डाक विभाग, 'पंडित जसराज के पंडित मोतीराम, पंडित मणिराम संगीत समारोह' पर स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए गौरवान्वित महसूस करता है और भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचार–प्रसार और इसकी श्रीवृद्धि में इन महान व्यक्तित्वों के अप्रतिम योगदान के महत्व को सलाम करता है।

आभार :

डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरा/विवरणिका	:	सुश्री गुलिस्ताँ
विरूपण कैशे	:	श्रीमती नीनू गुप्ता
पाठ	:	प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री से संदर्भित

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्य	:	500 पैसे
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक–टिकटें	:	207300
Stamps Printed	:	207300
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00